अध्याय : तृतीय

गोविन्द गुरू, आदिवासी समुदाय एवं मानगढ़ आंदोलन

गोविन्द : गुरू व्यक्तित्व और कार्य

गोविन्द गुरू का जन्म “डूँगरपुर रियासत के बांसिया गांव में सन् 1858 को एक बनजारा परिवार में हुआ।”[1] लोक प्रचलित मान्यतानुसार कहा जाता हैं कि “वहाँ के पुजारी बाबा ने बालक गोविन्द के संदर्भ में महान पुरुष होने की भविष्यवाणी की थी।”[2] गोविन्द गुरू ने औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की। इस पर डा. एल पी माथुर ’फारन डिपार्टमेट पोलिटिकल इन्टसल एमार्च’ का हवाला देते हुए लिखते हैं कि “ रामपुर कारागार में प्रस्तुत की गई फाईल की अपील से ज्ञात होता हैं कि 12 नवम्बर 1913 के संदेश में उनके प्रतिनिधि ने उनके हस्ताक्षर किए हैं तथा शेष कागजों में उनके अंगूठे की छाप अंकित हैं।”[3] इससे स्पष्ट होता है कि वह अनपढ़ थे लेकिन “ उनकी प्रतिभा और बौद्धिक विकास असाधारण था। वे संस्कारशील व्यक्ति थे भगवद्भक्ति में उनकी अटूट आस्था थी। वे मांस-मदिरा और अन्य मादक पदार्थों से दूर रहते थे। वे गले में रुद्राक्ष की माला धारण करते थे।”[4]

गोविन्द गुरू ने अपने साधारण जीवन को आध्यात्य की ओर लगाने का प्रयत्न किया।इस हेतु उन्होंने बूंदी के दशनामी अखाड़े से संबंध बनाया वहाँ केमुखिया राजगिरी गोसांई से दीक्षा ली। वहाँ के गोसाइयों के नाम भी बताए गए हैं- गिरीनाम, छोटानगर जी, सात्भनगर जी, राजगिर जी। वहाँ से दीक्षा लेने के बाद गोविन्द गुरू भीलों की तरफ ध्यान देना आरंभ करते है।“उन्होंने आदिवासी भील समुदाय व अन्य आदिवासियों की तरफ ध्यान देना आरंभ किया।”[5] “ उनका प्रथम शिष्य डूँगरपुर राज्य के सुराता गाँव का निवासी कुरा (कुरिया) था।”[6]

“भीलों में जनजागति लाने हेतु गोविन्द गुरू ने उस इलाके में भ्रमण किया। सिरोही पालनपुर, वागड़ कोथल, और मालवा की यागाएं की। जहाँ पर उन्होंने आदिवासी समुदाय में व्याप्त बुराइयों तथा उनके शोषण को नजदीक से देखा।”[7]

‘1880-81 ई. में गोविन्द गुरू दयानंद सरस्वती से उदयपुर में भेटें। उनकी शिक्षा व कार्य से प्रभावित हुए। परिणामस्वरूप स्वदेशी वस्तुओं की तरफ उनका ध्यान बढ़ा, उनका उपयोग करने लगे। दयानंद सरस्वती की प्रेरणा से ही उन्होंने ’सम्पसभा’ का गठन किया। जिससे आदिवासी समुदायों में जनजाग्रति लाकर प्रेम एकता और सौहार्द की भावना भरी जा सके।’[8]‘इस हेतु गोविन्द गुरू ने अपने गाँव के निकट छावी डूँगरीपर धूणी स्थापित की।’[9] ’अन्य धूनियाँ डूँगरपुर में सुराता, डाडपुरी, बड़ोदर, गुजरात के कम्बाई, वणेश्वर, घोटिया अम्बा, जगमेर, मानगढ़ आदि स्थानों पर बनाई।’[10]

गोविन्द गुरू पर विभिन्न धर्मों व सम्प्रदायों का प्रभाव पड़ा। उन्होंने दीक्षित होकर आदिवसी स्थानों का भ्रमण किया। वहाँ के जन जीवन को निकट से देखा।गरीबी और अज्ञानता से भरे जीवन को सुधारने के लिए आदिवासियों में जनजागृति फैलाने का कार्य किया। इस कार्य में विभिन्न सम्प्रदायों का प्रभाव भी परिलक्षित होता है। उनका मन भगवन शिव मैं ज्यादा रमता था।अपने प्रत्येक कार्य को शिव के साथ जोड़ कर देखते थे।

‘गोविन्द गुरू शैव मत से भी प्रभावित थे। वे शिक्षावृति को शिव मानते है और स्वयं गले में रूद्राक्ष धारण करते थे।’[11]

“गोविन्द गिर के पंथ के प्रतिमान उस समय में हिन्दू धर्म में प्रचलित अनेक मतों से प्रभावित थे।’’[12] ‘अनेक हिन्दु जातियाँ हिन्दू धर्म के निकट आचूकी थी, और संस्कृतिकरण की प्रक्रिया में गतिशील थी। उस समय वागड़ के आदिवासी भी इस प्रक्रिया से गुजर रहे थे। गोविन्द गुरू उनको तथा कथित हिन्दू धर्म की संस्कृति में लाकर उनके मनोबल को बढ़ाने

चाहते थे इसलिए उन्होंने अपने पंथ में हिन्दू धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों व धर्मों के सिदधान्तों व मतों का सम्मिलित किया।'[13]

'उनकापंथ काफी लोकप्रिय हो गया। अनुमान लगाया जाता है कि उनके अनुयायियों की संख्या उस समय में तीन-चार लाख के लगभग थी। अब उन्हे चमत्कारी साधु माना जाने लगा। वह रोगी के शरीर को चिमटा घुमाकर ठीक कर देते है। उन्होंने लकवे से पीड़ित एक स्त्री व एक पुरूष को निरोग कर अपनी चमत्कारि शक्ति का परिचय दिया।'[14] इसलिए शायद गोविन्द गुरू जगह जगह 'जय भोले नाथ' नाम का उच्चारण करते हैं।

'गोविन्द गिर स्वयं को कबीर दास से भी प्रभावित मानते हैं 14 नवम्बर, 1913 को अंग्रेज अधिकारियों को भेजे गए पत्र में उन्होंने कहा कबीरदास ने बताया कि जैसे हम कर्म करेंगे वैसा ही फल हमें प्राप्त होगा। यदि इस जन्म में अच्छे कर्म करेंगे तो उनका फल अगले जन्म में मिलेगा। आज भी इसके अनुयायी अपने भजन-कीर्तन में कबीर दास की वाणी को गाते है।'[15] लेकिन एक विशेष बात यह भी है कि कबीर निर्गुण उपासक थे और वह तो जन्म पुनर्जन्म में विश्वास ही नहीं करते थे।वे एकेश्वरवादी थे।

"भगवान एक है। अलग-अलग लोगउसे अलग-अलग रूप में देखती है। नाम व रूप कुछ भी हो लेकिन सृष्टि को रचने वाला एक ही है। महापुरूषों ने इस भेद को समझा।"[16]

उन्नसवीं सदी में भारत में समाज सुधार के कार्य तेजगति से चल रहे थे। स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित 'आर्य समाज' समाजसुधार के साथ-साथ स्वदेशी आंदोलन को भी चला रहे थे। गोविन्द गुरू भी इससे अछूते नहीं रहे। गोविन्द गुरू उदयपुर में स्वामी दयानंद सरस्वती से मिले थे। प्रेमसिंह कांकरिया लिखते है कि "गोविन्द गुरू 1880-81 में उदयपुर में स्वामी दयानंद के सम्पर्क में आए।"[17] गेरूवे वस्त्र धारण करना, धूनियों पर निरन्तर होम करवाना, विधवा विवाह का समर्थन करना, मूर्तिपूजा का विरोध करना, आदि कार्य'आर्य समाज' के कार्यों में मेल खाते है।

आदिवासी समुदाय : अर्थ एवं स्वरूप

भारतीय समाज भिन्न-भिन्न प्रजाति समूहों का संगम रहा है जहाँ पर विदेशी समुदाय समय-समय पर अपना वर्चस्व कायम करने हेतु प्रवेश करते हैं, लेकिन समयान्तराल में ऐसे समूहों की सांस्कृतिक सामाजिक परम्पराएँ भारतीय समाज का हिस्सा बन गयी। इसके पश्चात् भी कुछ मानव समूहों ने अपनी संस्कृति को बाहरी संस्कृति व सभ्यता से बचाए रखा। जिनको सामान्य तौर पर आदिवासी कहा जाता है। वास्तव में आदिवासी ही किसी भी स्थान के जल जंगल व जमीन के असली मालिक है।"वस्तुतः आदिवासी से तात्पर्य उस क्षेत्र विशेष का मूल निवासी होने का घौतक है।"[18]

सयुक्त राष्ट्र संघ ने भी अपने घोषणा पत्र में आदिवासी राष्ट्र को परिभाषित इस प्रकार किया "आदिवासी राष्ट्र का तात्पर्य उन लोगों के वंशजों से हैं, जो किसी देश की वर्तमान भूमि के पूरे या कुछ भाग पर विश्व के अन्य भागों की किसी भिन्न संस्कृति अथवा नस्ल के लोगों द्वारा पराजित कर दिए जाने ...के पहले से ही वहाँ निवास कर रहे थे।"[19]

जगदीश प्रसाद मीणा अपनी पुस्तक –'भील जनजाति का सांस्कतिक एवं आर्थिक जीवन' में लिखते है कि भारत सरकार के जनसंख्या विभाग से इनको आम जनसंख्या में शामिल करने के उद्देश्य से सर्वेक्षण कर वर्गीकरण का कार्य किया।सन् 1981 ई की जनसंख्या रिपोर्ट के अनुसार इन्हें परम्परागत का माप के आधार पर वर्गीकृत किया गया। इस रिपोर्ट को बनाने वाले जनसंख्या आयुक्त श्री जे.एन. बेन्स थे। आदिवासियों को 'वन्य जातियाँ' कहा गया। सन् 1901 ई. की जनसंख्या रिपोर्ट के अनुसार आदिवासी प्रकृतिवादी बना दिए गए और सन् 1921 ई की जनसंख्या रिपोर्ट में इन्हें'पहाड़ी' व वन्य जनजातियाँ बनाया और 1931 ई. की रिपोर्टानुसार आदिवासी 'आदिम जनजाति' थे।

भारत सरकार अधिनियम सन् 1935 ई में जनजाति शब्द में कुछ परिवर्तन करते हुए भारतीय जनसंख्या को 'पिछड़ी जनजातियाँ' कहा गयां 'जनजातियाँ' शब्द सन् 1941 ई की जनसंख्या रिपोर्ट में प्रयुक्त किया गया।'[20]

आदिवासियों को 'आदिवासी' कहा जाए अथवा जनजाति यह एक विवादास्पद प्रश्न है। लेकिन भारतीय संविधान में आदिवासियों के लिए 'जनजाति'शब्द प्रयुक्त किया गया।

संविधान में 'जनजाति' शब्द उन जनसमुदायों के लिए प्रयुक्त किया गया है जिन्हें भारत के राष्ट्रपति ने संविधान के अनुच्छेद 342 के अधीन सन् 1950 ई को अनुसूचित जनजाति के तौर पर निर्दिष्ट किया है कि "राष्ट्रपति सार्वजनिक सूचना द्वारा, जनजातियों, जनजाति समुदायों या जनजातियों के भीतरी समूह परिगठित किए जा सकेंगे,वे सब अनुसूचित जनजाति कहलायेंगे। अतः स्पष्ट है कि समय समय में इनकी संख्या में परिवर्तन होता रहा है।।"[21]

निष्कर्षतः वह सकते है कि आदिवासी भूमि पर आदिमकाल से निवास करने वाले वे लोग है जिनकी सभ्यता और संस्कृति प्रकृति के सहअस्तित्व में विकसित हुई और सामूहिक भाव अपने पारम्परिक रीति-रिवाजों के साथ आंनदमय सुखामय जीवन जीने की कला में विश्वास रखते है।

इस देश के आदिवासियों ने अपने आप को बचाने तथा अपनी सभ्यता एवं संस्कृति को बचाने हेतु संघर्षमय जीवन जीया। यह संघर्ष आर्यों सभ्यता से ब्रिटिश राजनीतियों साथ ही अन्य समुदायों से भी था। प्रकृति पर निर्भर रहने वाला आदिवासी समुदाय 'प्रकृति पूजक' कहलाया। भूमि से आदिकाल से जूड़ा होने के कारण 'भूमिपुत्र' कहलाया। यह भूमिपुत्र, प्रकृतिपूजक, भारत के विभिन्न राज्यों में निवास कर रहा है। जिन्हें भिन्न-भिन्न नामों से जानते है। यथा- मुंडा, संथाल, गोंड, भील, शाबर, किरात, कील, मित्रो, मीणा, खडिया, गरासिया, डामोर, नाग आदि। इनकी अपनी अलग-अलग संस्कृति है, लेकिन मूल में एक ही भाव है प्रकृति के साथ गहरा तादाम्य। राजस्थान प्रदेश के दक्षिण अंचल में अधिकांश रूप से भील, मीणा, गरासिया व डामोर जनजातियाँ निवास करती है।

आदिवासी समुदाय की खुली संस्कृति है उनकी प्रथाएँ, रीति रीवाज और मेले त्यौहार। लोक कथाएँ इनके जीवन का अभिन्न हिस्सा है। जिसके माध्यम से ये समुदाय अपने अतीत व वर्तमान के मध्य सामजस्य स्थापित करते है। लोक कथाओं का आरंभ पारम्परिक गीतों के माध्यम से करते है। हरीराम मीणा ने 'धूणी तथे तीर' उपन्यास में आदिवासी समुदाय में प्रचलित लोक कथाओं को उचित जगह दी है। आमलिया गाँव धूणी पर आदिवासियों द्वारा अपनी कथा आरंभ करवाई है जिसके प्रारंभ में लोक गीत 'हीड़ों' को उदृधत किया। इस लोक कथा के माध्यम से आदिवासी समुदाय की अप्रत्यक्ष प्रेमभरी भावनाएँ उदृधत की। नंदू और कमली के पवित्र प्रेम को इस कहानी के माध्यम में सुदृढ़ता प्रदान की है। जो की आदिवासी समुदाय की जड़ है। जो इनके पारिवारिक परम्परा की गत्यातमक प्रणिती है। मनमुताबिक प्रेम और विवाह की परम्पराएँ 'भगोरिया' और 'घोटुल' अपने आप में अनूठी परम्पराएँ है। जो आदिवासी संस्कृति का उदात पक्ष है। अपने आप को सभ्य कहलाने वाले समुदायों में नारी मुक्ति के नाम पर यौन विकृतियाँ ही उच्छृखलता में दिखाई देती है जबकि आदिवासी समुदाय में नारी को प्राचीन काल से ही स्वतन्त्रता थी। स्त्री पुरूष का परस्पर प्रेम भाव परिलक्षित होता है। 'जिसे यूनान के महान दार्शनिक 'प्लेटो' के 'दार्शनिक राजा' और उत्तम शासन सिधांत से जुड़ा हुआ पायेंगे।'[22]

आदिवासी समुदाय सामूहिक न्यायिक प्रणाली में विश्वास करते है।'उनके पंचायत का मुखिया, जिसे दक्षिणी राजस्थान के आदिवासी 'गमेती' कहते हैं, कहीं पटेल कहते है,पंचायत के अन्य सदस्यों से विचार-विमर्श कर न्यायिक कार्य संपन्न करते है।'[23]

'आदिवासी समुदाय कच्ची बिखरी या छितरी व्यवस्था में बनी झोंपड़ियों में निवास करते हैं जिनको पाल कहा जाता है कही पर इन्हें अन्य नामों से भी जाना जाता है। यथा 'टापरी', थूर आदि। प्रसिद्ध नृतत्वशास्त्री वेरियन एल्विन लिखते हैं कि 'व्यापक स्तर पर देश के आदिवासियों के निवास स्थलों को देखने से स्पष्ट होता है कि आदिवासियों का बहुत बड़ा

हिस्सा छितरायी हुई बस्तियों में निवास करता है, जिन्हे भील बस्तियाँ टापरा के नाम से पुकारती है जबकि मेर और मीणा अपनी झोंपड़ियों का मादा नाम से अभिहित करते है।'[24]

मानगढ़ आन्दोलन : क्रमिक विकास

गोविन्द गुरू आदिवासियों के दुःख दर्द को देख रहे थे। उनका आदिवासियों व आदिवासियों का गोविन्द गुरू के प्रति आत्मीय भाव संबंध थे। गोविन्द गुरू आदिवासियों में चेतना जागृत करना चाहते है। इसलिए सर्वप्रथम सुरांता गाँ में एक बड़ा सम्मेलन करवायां जिसमें बड़ी संख्या में आदिवासियों ने उपस्थिति दर्ज करवाई। इसी सम्मेलन में 'संपा सभा' की स्थाई घोषणा की गई।

> **"गोविन्द गुरू के नेतृत्व में आदिवासियों का पहला बड़ा सम्मेलन सुराता गाँव में आयोजित किया। ...उस सम्मेलन में संपासभा के गठन की बाकायदा घोषणा की गयी।''[25]**

सन् 1898 ई में एक भंयकर अकाल पड़ा। इस अकाल काल में लोगों की हालत खसता हो गयी। इस अकाल को आज भी लोगअपनी स्थनीय भाषा में 'छप्पन्या काल' कहकर याद करते रहते है। क्योंकि उस समय सवत् 1956 विक्रमी थी। इस दौरान मनुष्यों के लिए तो दूर मवेशियों तक को खाने के लाले पड़ गए। दुःख और भूख काखुला तांडव था। हर जगहमरने वालों की संख्या निरन्तर आरोही क्रम में बढ़ रही थी। आदिवासी क्षेत्रों में यह अकाल और ज्यादा विकराल रूप में प्रस्तुत हुआ। हैजा की महामारी फैली। यहाँ एक-दूसरे को सहयोग की महत्ती आवश्यकता थी। अकाल व महामारी से उत्पन्न समस्या को ध्यान में रखते हुए गोविन्द गुरू ने आदिवासियों दूसरा बड़ा सम्मेलन बांसिया ग्राम में आयोजित करवाया। इस सम्मेलन का इस विशेष उद्देश्य को ध्यान में रखकर करवाया कि सभ्यसभा के माध्यम से लोगों सहायता पहुँचाई जासके।

गुरू ने आदिवासियों का दूसरा बड़ा सम्मेलन बासिया में करवाया। जिसे छाणी मगरी भी कहा जाता था।''[26]

बागड़ प्रदेश में गठित सभ्यसभा के परिणाम स्वरूप गोविन्द गुरू की लोकप्रियता में इजाफा होना आरंभ होता है। बच्चे, स्त्री-पुरूष व्यस्क एवं वृदध सभी आयुवर्ग के लोगों का गोविन्द गुरू के प्रति आदर भाव दिनों दिन बढ़ता गया। इस कारण आदिवासी लोग अभिवादन में 'जय गुरू महाराज' शब्द प्रयुक्त करने लगे।

संपा सभा के गठन के बाद बागड़ के सम्पूर्ण आदिवासी अंचल में गोविन्द गुरू की लोकप्रियता में जबरदस्त रूप से फैल चुकी थी। ...'जय गुरूदेव' एक आत्मीय अभिवादन से संबोधन से बढ़कर आदिवासी एकता का संदेश देने वाला नारा बन चूका था।''[27]

गोविन्द गुरू अपने मत को आदिवासियों के वर्चस्वशाली स्वरूप में देखना चाहते थे।'मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णिमा के दिन मानगढ़ पहाड़ी पर गोविन्द गुरू अपनी धूणी स्थापित करते हैं।[28] जहाँ प्रतिवर्ष माघपूर्णिमा को मेला भरता है। हजारों की संख्या में आदिवासी एकत्र होते है। गोविन्द गुरू उनको आध्यात्मिक ,सामाजिक,नैतिक और चारित्रिक सुधार संबंधी उपदेश देते थे।

गोविन्द गिर के कार्यों से दिन-बे-दिन लोग जुड़ते गये। वहाँ के आस-पास के शासक चिंतित होने लगे। रामपुर का शासक भी चिंतित हुआ। उसने रेवाकांथा के पोलिटिकल एजेन्ट से प्रार्थना की कि गोविन्द गिर के कार्यों को नजर में लेवे।

उसके कार्यों को निगरानी में रखते हुए उसे गिरफ्तार करें। रायपुर शासक की प्रार्थना पर अंग्रेजी सरकार दक्षिणी राजस्थान के आदिवासी इलाकों पर नजर रखने लगी। पंचमहल

जिलाधीश से इस संबंध में चर्चा की। जिस पर पंचमहल जिलाधीश शांति व्यवस्था हेतु गश्त लगवाने का मानस बनाते है। उपजिलाधीश को आदेश जारी करते है कि पंचमहल व गोविन्द गुरू के कार्यों की पूरी निगरानी रखे।

'एजेन्ट टू गर्वनर ने 8 नवम्बर, 1913 ई को भीलो के मानगढ़ पर एकत्र होने की सूचना भारत सरकार को दी। 31 अक्टूबर, 1913 से इस स्थल पर हो रही विभिन्न घटनाओं के संबंध में भारत सरकार का जानकारी देते हुए लिखा कि रेवाकांथा के पोलिटिकल एजेन्ट द्वारा 'मेवाड़ भील कोर की'सहायता हेतु मांग पत्र भेजा है। परिणाम में मेवाड भील कोर्प्स की दो कम्पनियां भेजी गयी। नसीराबाद 'नेटिव इन्फेन्ट्री' को भी भेजा गया। साथ ही सर्तकता बरतने की सलाह लिखी। इस पर भारत सरकार ने दक्षिणी राजस्थान के तत्कालीन पोलिटिकल एजेन्ट आर.ई. हेमिल्टन को मानगढ़ की स्थिति का मौका मुआना कर वहाँ के लोगों से आपसी सौहार्द्रपूर्ण रवैया अपनाते हुए बातचीत हेतु राजी करना और आवश्यकतानुसार उचित कार्यवाही करने हेतु भेजा। गोविन्द गुरू के कार्यों के संदर्भ में उठाये कदमों की जानकारी भारत सरकार को मुम्बई सरकार ने 5नवम्बर दी। जिसमें बताया गया कि स्थिति नियत्रंण से परे होती जा रही है। 8 नवम्बर को कमांडेड जे.पी. रूटोक्ले भी अपनी दो कम्पनियों के साथ वहाँ पहुँच गया। पृथ्वी सिंह, गढ़ी राव साहब भी लगभग उसी समय वहाँ पहुँच गए।'[29]

'हेमिल्टन व स्टोक्ले ने 12 नवम्बर को गोविन्द गुरू से मिलने की योजना पर चर्चा करते है। इस योजना में वहाँ के गमेतियों से सलाह-मशविरा की गयी और उन्ही के माध्यम से गोविन्द गुरू से निशस्त्र होकर मिले। जहाँ गोविन्द गुरू के प्रतिनिधियों ने उनको गोविन्द गुरू की शिक्षाओं व आदिवासियों के हितो की संदर्भित मांगो से अवगत कराया। जिनमें गोविन्द गुरू को एक सज्जन गृहरथ साधुमय जीवन यापन करने वाला व्यक्ति बताया और अपने जीवन यापन हेतु शिक्षा वृति व भिक्षाटन करते हैं,जानकारी दी।"[30]

'अंग्रेजी सरकार मानगढ़ से भीलों को हटाना चाहतीथी। इस हेतु वे कटिबदध थे। बड़ौदा व अहमदाबाद से सैनिक टुकडियाँ बुलाई गई। 13 नवम्बर को बड़ोदा से 104 राइफल्स व अहदाबाद से सातवींजाट रेजिमेन्ट अपनी मशीनगन समेत मानगढ़ पहाड़ी पर मौर्चा संभालने पहुँची।'[31]

मानगढ़ पर एकत्र व्यक्तियों की संख्या कितनी थी। यह आजतक मतभेद का विषय है। विद्वानों ने अपने-अपने शोधों से अनुमान लगाने का प्रयास किया।'अंगे्रजी सरकार अपने आकड़ों मे मानगढ़ पर 13 नवम्बर को तीन हजार आदिवासियों के एकत्र होने की पुष्टि करती है। वही हिम्मत लाल त्रिवेदी यहीं आकडे दो लाख तक पहुँचाते हैं, ज्योतिपूंज हजारों की संख्या में भीलों के एकत्र होने की बात करते हैं। भगवती लाल जैन लाखों नर-नारियों के एकत्र होने की पुष्टि करते है।'[32]मानगढ़ पहाड़ी पर 4000भील एकत्र हुए जिन्हें तितर.बितर करने के लिए अंग्रेजों को पर्याप्त प्रयास करना पड़ा।"[33] वास्तव में मानगढ़ पर कितने आदिवासी एकत्र थे, अनिर्णित है जो भी हो इतना तो अवश्य कहा जा सकता है 'जिस प्रकार से अंगे्रजी सरकार सेना की टुकड़ियां बुला रही उसके अनुसार तो भीलों की संख्या बल काफी रहा होगा।'[34]

आदिवासियों के इस तरह एकत्र होना गोविन्द गुरू धार्मिक उद्देश्य से जोडते हैं वहीं अंग्रेजी अधिकार भीलों का इस प्रकार एक जगह पर एकत्र होने को राजनीतिक साजिश के तौर पर देखती है।

'मानगढ़ पहुँचने वाले अंग्रेज अधिकारियों को भारत सरकार का आदेश मिला कि मानगढ़ पर एकत्र भीलों को समझाया जाए। उनसे मिलकर बातचीत की जाए। मामले को शांत किया जाए। लेकिन बंबई सरकार के मध्यस्तापर जिसमें उसकी चतुराई और होशियारी परिलक्षित होती है, मानगढ़ पर एकत्र भीड़ का हटाने व भानगढ़ पहाड़ी खाली करवाने हेतु

बल प्रयोग की अनुमति दे दी जाती है। ताकि सैनिक कार्यवाही कर शांतिव्यवस्था बनाई जा सकी।'[35]

गोविन्द गुरू आदिवासियों का विनाश नहीं देखना चाहते थे। साथ ही साथ गोविन्द गुरू शांतिप्रिय व्यक्ति थे। आध्यात्म में मग्न रहते थे। धार्मिक प्रवृति के थे। इसलिए विनयपूर्ण भाषा में अंग्रेजों से अपने दुःख दर्दों को बताते। देशी राजाओ की करतुतों से अवगत करवाते। आदिवासियों का वास्तविक जीवन क्या हैं? पर टिप्पणियाँ देते। फिर भी अंग्रेजी सरकार उनकी प्रार्थना अस्वीकार करती हैं आखिर ऐसा क्यों? कारण का स्पष्टीकरण देशी राजाओं-महाराजाओं की अपनी मनोदशा थी। वे नहीं चाहते थे कि गोविन्द गुरू की लोकप्रियता व ख्याति बढ़े। आदिवासी संगठन व संस्कारित हो समझदार बने। उनकी इच्छा थी जल्द से जल्द गोविन्द गुरू की गिरफ्तार कर लिया जाए। आदिवासियों को उनके हाल पर छोड़ दिया जाए। ताकि उन्हें मशीनों से डरा-धमकाकर मनमानी श्रम ली जा सके।

"बांसवाड़ा, डूँगरपुर, सून्थ , ईडर के शासक और उसके अधीनस्थ जागीदार इसबात को लेकर बैचन थे कि मानगढ़ पर हो चुकी आदिवासियों की किलाबंदी को तोड़ने में अंग्रेज अधिकारी देरी क्यों कर रहे हैं। आदिवासियों के दमन के लिए ये सामंत उन अधिकारियों को बार-बार निवेदन कर रहे थे।''[36]

देशी रजवाड़े आदिवासी विद्रोह से भयभीत थे। इस संदर्भ में उन्होंने अंग्रेजी सरकार से सहायता हेतु प्रार्थना की। अंग्रेजी सरकार की अपनी नियत थी। वह हर तरह से भारत के प्रत्येक भू-भाग पर अपना प्रभूत्व कायम करना चाहती थी। इसलिए अंग्रेजी सरकार ने देशी राजा महाराजाओ की प्रार्थनाएं स्वीकार की। इस कार्य में गतिशीलता तब आती है जबमानगढ़ पहाड़ी की तलाशी लेकर आवश्यक सुचना एकत्र करने का आदेश दिया जाता है। इस प्रकार मिली सूचनाओं के आधार पर मानगढ़ पर कार्यवाही आवश्यक लगती है तब

एक योजना निर्मित की जाती है जिसके निर्माता नार्थन डिवीजन के कमिश्नर थे। उन्होंने अपनी योजना के पूर्व रूप देने हेतु चार्ट तैयार किया। जिसमें ’मानगढ़ आपरेशन’हेतु आदम्बरा गाँव का चयन किया जाता है। अब आदम्बरा में फौजी पड़ाव पड़ने आरंभ हुए। कई कमाण्डरों का कर्नलों का जमवाड़ा आरंभ होता है। मेजर वेली के नेतृत्व में सैनिक कार्यवाही की जानी थी। मेवाड़ भील कौर, राजपूत रेजिमेन्ट, व कम्पनी रजिमेन्ट के सैनिक अपने मुखिया के निर्देशन में अपना बल दिखाने हेतु एकत्र हुए।

आदम्बरा गाँव में ’मानगढ़ ऑपरेशन’ पर गरमागरम चर्चा हुई। इस चर्चा के उपरान्त कमिश्नर ने अपना मत प्रकट किया। जो गोविन्द गुरू व पूंजाधीरा को गिरफ्तार करने से संबंधित था।

“17नवम्बर को फौजी कार्यवाही दवारा मानगढ़ खाली करवा लिया जावे और गोविन्द गिरी व पूंजाधीरा का गिरफ्तार कर उसके सम्मुख प्रस्तुत किया जावे।’’[37]

इस प्रकार ‘1913 ई को 6 से 10 नवम्बर तक विभिन्न रजिमेन्टो की सेनाएँ जिनमें बेलेजली रायफल्स की एक कम्पनी, सातवी रेजीमेन्ट की एक कम्पनी और मेवाड़ भील कोर की दो कम्पनियाँ, मानगढ़ पहाड़ी पर एकत्र हो रहे आदिवासियों को कुचलने पहुँची।’[38]

‘अंग्रेजी सरकार मानगढ़ पर एकत्र आदिवासियों को छिनभिन कर अपना मकसद पूरा करना चाहती थी। अपने मकसद की पूति। हेतू आम्बादरा गाँव में फौजी पड़ाव डाला। जहाँ से गोविन्द गुरू से समझौता वर्ता भी आसानी से की जा सकती थी साथ ही आक्रमण भी। गोविन्द गुरू अंहिसा प्रिय पवित्र थे। इसलिए सबसे पहले शांति वार्ता का मार्ग अपनाया और अपना त्रिसदस्यीय प्रतिनिधि मंडल अंग्रेजी सरकार के फौजी असफरों से वार्ता करने हेतु वहाँ भेजा।’गोविन्द गुरू ने अंग्रेजी फौजी असफरो से समझौता-वार्ता हेतु अपने प्रिय और सबसे

विश्वसनीय साथी-शिष्य पूंजाधीरा से पत्र लिखवाया और तीन सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल को समझाकर पत्र सहित आदम्बरा रवाना किया।'[39]

गोविन्द गुरू ने अपने धूणीधामों के क्रियाकलापों व अपनी विवशताओं से अंग्रेजी सरकार के अफसरों को अवगत कराया। बताया गया कि वह किसी प्रकार का राज्य करना नहीं चाहते है वह तो केवल झूठ, मक्कार-नशा सामाजिक बुराइयों से बचने की शिक्षा देता है। धर्म के मार्ग पर चलने की शिक्षा देता है। लेकिन मेरे प्रति लोगों में गलत सूचना फैलायी गयी जिसके परिणामस्वरूप डूँगरपुर रियासत ने मुझे गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया। मेरे धूणी स्थलों के अपवित्र किया गया। मेरे पर तरह-तरह के जुल्में ढाये गये। इसलिए मैं अपने आप को बचाने के लिए भाग दौड़कर इस मानगढ पहाड़ी पर आया हूँ।

" मैं तो भगवान में विश्वास करता हूँ। उनका ध्यान करता हूँ। आप के प्रति सम्मान की भावना प्रकट करता हूँ। मैं आप से प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरे दुःखों को समझे और उन्हें दूर करने का विचार करें। मैं मेरे निर्धन आदिवासी शिष्यों के साथ भगवान का भजन कर रहा हूँ। मेरे शिष्य आदिवासी जन है जो भोले-भाले कृषि कर्म पर निर्भर रहकर जीवन यापन कर रहें है। प्रकृति से अपना भरण-पोषण प्राप्त करते हैं।"[40]

'गोविन्द गुरू द्वारा भेजा प्रतिनिधि मनुष्य 12 नवम्बर को आम्बादरा गाँव में पड़ाव डाले अंग्रेजी सरकार के अफसरों से मिला। सरकारी अफसरो से पत्र पढ़कर व प्रतिनिधि मंडल की बात सुनकर गोविन्द गुरू के कार्यों के प्रति संवेदनशीलता प्रकट की। लेकिन उन्हें सशस्त्र आदिवासियों का एक पहाड़ी पर एक साथ एकत्र होना उचित नहीं लगा। इसलिए इस घटना को उन्होंने राजद्रोही की श्रेणी में रखा। समझौता वार्ता पर कहा कि सर्वप्रथम मानगढ़ खाली करे उसके उपरान्त ही गोविन्द गुरू की मांग-प्रश्नों पर विचार किया जाएगा।'[41] साथ ही साथ यह भी कहा कि आप के द्वारा किए प्रयास सदकर्मों की श्रेणी में हैं। इसलिए हम प्रत्येक

राज्य को गलत हरकत न करने का आदेश दे देंगे लेकिन आप लोगों का हथियार सहित एकत्र होना सहन नहीं कर सकते। आप लोगों को सचेत किया जाता है कल दोपहर तक आप लोग मानगढ़ पहाड़ी खाली कर दे। हम अपनी सेना मानगढ़ पहाड़ी पर भेज रहे हैं। यदि आप में से किसी ने पहाड़ी पर सेना का सामाना किया तो उसे मार दिए जाएगा।

समझौता वार्ताअसफल रही, फिर भी दलपतराय महेता ने एक आशा जगाने का प्रयास किया। दलपतराय मेहता चाहते थे कि डूँगरपूर महारावल से इस प्रसंग के संदर्भ में बात की जाये। यहाँ मेहता जी अपनी इज्जत बढ़ाने के हिसाब के यह बात करते है। गोविन्द गुरू की मार्फत आदिवासियों में अपनी इज्जत बनाये रखना चाहते थे। ये मेहता भोले-भोले साधु को बहुत सम्मान देकर आदिवासियों पर अप्रत्यक्ष शोषण थोपना चाहता था। मेहता की बातों से जाहिर होता है कि वह आदिवासियों व डूँगरपूर महारावल दोनों पक्षों से अपना हित साधना चाहता है। लेकिन गोविन्द गुरू की सुझबूझ में जनजागृति कार्यक्रमो से आदिवासियों में काफी हद तक चेतना का प्रादुर्भाव हो चुका था। इसलिए कुरिया यह कहकर विरोध करता है कि

“फौज निकट आ चूकी है और मेहता जी महारावल की मध्यस्ता से मामला निपटाना चाहते है जबकि महारावल की अंग्रेजी सरकार के समझ कुछ भी नहीं चलती हैं।”[42]

गोविन्द गुरू आदिवासियों को उनके हक दिलवाना चाहते थे। इस संदर्भ में अंग्रेज अधिकारियों को बार विनती करते। शांतिपूर्ण तरीका खोजना चाहते ताकि खून-खराबा हुए बगैर आदिवासियोंका कुछ भला हो सके। 14 नवम्बर को एक पत्र यय संदेश अंग्रेजों के पास पुनः प्रेषित किया। जिसकी भाषा पहले की अपेक्षा अधिक लचीली थी। आदिवासियों के दुःखों की पुकार थी। फिर भी अंग्रेजी हुकूमत गोविन्द गुरू की एक भी नहीं सूनती है। केवल एक ही तरह केशब्दों का प्रयोग करती है कि मानगढ़ खाली करने के बाद ही आगे सोचा जाएगा। लेकिन आदिवासी लोग भी अपनी जायज मांगों को लेकर मानगढ़ पर डटे रहे। आखिर में ब्रिटिनी हुकूमत ने मानगढ़ खाली कराने की कार्यवाही आरंभ कर दी। एक सोची

समझी रणनीति तैयार की थी।'सुबह छः बने आक्रमण करने की योजना बनायी। रातोंरात मानगढ़ पहाड़ी को घेरा गया। सेना की चक्रव्यूह रचना की गई। इस योजना का निर्माता मेजर वेली था। निकटवर्ती राज्यों की सेना को बुलाया गया और नियत स्थानों पर भेजा गया। जिसमें पंचमहल, बारिया, बांमवाड़ा, मेवाड़ आदि राज्यों की सेना शामिल पंचमहल के जिला पुलिस अधीक्षक 40 सशस्त्र जवानों के साथ मानगढ़ के नीचे दक्षिण-पश्चिम घाटी में, बारिया के ठाकुर के नेतृत्व में उसी के घुड़सवार मानगढ़ की पूर्व घाटी में, ... बांसवाड़ा राज्य के 100 घुड़सवार मानगढ़ पहाड़ी के पूर्व-दक्षिण समतल भू-भाग पर जाट रेजिमेन्ट व 9वी रेजिमेन्ट के सैनिकों को दूसरी पक्ति में खड़ा किया।'[43] अंग्रेजी सैनिक व अधीनस्थ राज्यों के सैनिक 7 नवम्बर को अपने गत्तव्य की और प्रस्थान करते है। स्टाँकले अपनी सैनिक टुकड़ी 'भील कार्प्स'के साथ सुबह जल्दी ही मानगढ़ पहाड़ी पर पहुँच गया। जिसके साथ 104 राइफल्स व एक मशीनगन थी। जिसकी कमान कैप्टीन पीटरसन संभाल रहा था। प्रभात को कैप्टीन स्टोकले चुपचाप मानगढ़ पहाड़ी के दक्षिणी-पूर्वी तंग रास्ते से चढ़ा। पीटरसन अपनी टुकड़ी के साथ मानगढ़ पहाड़ी के मिलन स्थल की ओर बढ़ा आदिवासी इस भ्रम में थे कि अंगे्रजी सरकार डरे हुए हैं, समझौता कर लेगे।मानगढ की इस प्रकार हुई घेराबंदी को गोविन्द गुरू को खबर तक नहीं थी। सुबह के समय लोग धूणी पर हवन की आशा बंधाये अपने-अपने नित्यकर्मों से निरत हो रहे थे। आदिवासी अंग्रेजी फौज के बारे सोचे उसके पहले ही गोलियों की बोछार शुरू हो गयी दक्षिण दिशा में बांधी सुरक्षा दीवार को तोड़ दिया गया। मेले में उपस्थित लोगों में भगदड़ मंच गयी। बुढढे, बच्चे, स्त्री और गुरू गोविन्द स्वयं इस हमले से सकते में आ गये। एकत्र लोग कुछ सोचे समझे इससे पहले ही तड़ातड़ गोलियां बरसने लगी। सीधे-साधे भक्त गोविन्द गुरू को अंग्रेजी हुकूमत की ओछी हरकत पर क्रोध आया ओर बोल पड़े-

"मानगढ़ मारी धूणी हैं, भूरेटिया
नी मानू रे, नी मानू रे।''[44]

'मानगढ़ पहाड़ी की घटना का दुःखद अंत हुआ। इस हत्याकांड में कितने लोग मारे गए आज तक विवादित है। विवाद रहित होता भी कैसे और क्यों? इसका सीधा सा उत्तर है कि इतिहास हमेशा ही सत्ताधारियों द्वारा अथवा उनके पक्ष में लिखा जाता है। चाहे वास्तविकता जो भी है।'हमारी तस्वीर दृश्य विधान पूर्व से नियत कर दी जाती। विभिन्न रेखिए आयामों का चयन कर लिया। यह अचानक से नहीं हुआ बल्कि एक विशेष दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर उन्हीं तथ्यों का चयन और लेखांकन किया गया जो उनके दृष्टिकोण का समर्थन करते थे और जिस दृष्टिकोण को आगामी पीढ़ी के लिए छोड़ जाना चाहते थे।'[45]

इसलिए इतिहास के पुनर्लेखन की आवश्यकता है। अंग्रेज अधिकारियों के अनुसार मानगढ़ हत्याकांड में कुछ व्यक्ति घायल हुए और आठ व्यक्ति मारे गए।'[46] सुमित सरकार के अनुसार "मरने वालो की संख्या बारह थी।"[47]रमणिका गुप्ता लिखती है।मानगढ़ हत्याकांड इतिहास का अदृश्य पृ0 है जिसमें 1500 आदिवासियों को एक ही बार में गोलियों से भून दिया गया।'[48] हरिराम मीणा का कथन है-

मैनें सबसे अधिक आधिकारिक प्रमाण यह माना कि अंग्रेजी फौजें रवाना हुई वे कितना गोला बारूद लेकर मा नगढ़ ओपरेशन के लिए चली थी और कितना वापस जमा कराया। करीब चालीस प्रतिशत गोला बारूद वापस जमा कराया और साठ प्रतिशत आदिवसियों पर खर्च हुआ मानगढ़ पर जितने व्यक्ति मारे गये उतने ही घायल हुए।निष्कर्षत: कुल मृतकों की संख्या करीब डेढ़ हजार बैठती है।'[49]

इस तरह आंकड़ों में आदिवासायों की उपस्थित भी उलझी हुई है अंग्रेजी सरकार 4 हजार आदिवासियों के एकत्र होने की बात कहती हैं, हिम्मत लाल त्रिवेदी आदिवासियों की संख्या को तकरीबन 2 लाख तक पहुँचाते हैं, और ज्योति पुंज हजारों आदिवासियों के एकत्र होने की बात करते है।'[50]'सुमित सरकार यही संख्या '4 हजार पर लाकर छोड़ते हैं।'[51] निष्कर्ष

में वह सकते है कि एकत्र आदिवासियों की संख्या 4 हजार से 5 हजार के मध्य रही होगी जबकि मरने वालों की संख्या में हरिराम मीणा व रमणिका गुप्ता के आंकड़ो से सहमत हुआ जा सकता है। हाँ कम नही ज्यादा जरूर हो सकते है।

अब प्रश्न यह उठता है कि अंग्रेजी सरकार ने इतनी तत्परता से सैनिक कार्यवाही क्यों की? जबकि ईस्ट इंडिया कम्पनी की देशी राज्यों के साथ हुई कुछ संधियों के तहत वहाँ के शासन प्रमुखों को यह आश्वासन दिया गया था कि ब्रिटानी हुकूमत उनके आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगी। समय बदलता गया अंग्रेजी सरकार के पोलिटिकल विभाग के बड़े अधिकारियों ने इस प्रकार दिये आवश्वासनों की पालना नहीं की। किसी राज्य के शासक, सामंत और प्रजा के मध्य किसी प्रकार का टकराव हो जाये तो अंग्रेजी यह करकर उनके मामलों में हस्तक्षेप करती थी कि हम सार्वभौमिक शांति बनाये रखना चाहते हैं। जिसमें उन्हीं के खर्च पर सैनिक सहायता देती थी और राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक व सामरिक मामलों को प्रभावित करती थी।’गोविन्द गुरू की आदिवासियों में बढ़ती लोकप्रियता को वागड़ व समीपवर्ती इलाके के शासकों ने अपनी सत्ता के विरूद्ध चुनौति माना और अंग्रेजी सरकार से प्रार्थना की। जिस पर अंग्रेजी सरकार ने उन्हें सहायता प्रदान की।’[52]‘वागड़ में शांति व समृद्धि के इस काल में परिस्थितियों में सहसा गंभीर परिवर्तन होता है तो विपति काल में परिस्थितियाँ और भी गंभीर हो सकती है। ऐसी परिस्थितियों में आदिवासियों का विद्रोह व्यापक रूप ले लेगा। जिससे निपटना खांडे की धार पर चलने जैसा होगा।’[53]

‘2 नवम्बर, 1913 को हेमिल्टन ने मेवाड़ के रजिमेन्ट को पत्र लिखा कि मानगढ़ घेरे से कुछ समय पूर्व ढांढला में काम कर रहे एक इसाई मिशनरी के एक सदस्य ने अवगत कराया कि गोविन्द गुरू के आंदोलन की जड़ो में विद्रोही भावना पनप रही हैं और दिवाली पर विद्रोह करने संभावना है। इस से यह स्पष्ट होता हैं कि आदिवासी प्रदेशों में काम करने वाले इसाई धर्म प्रचारक चिंतित थे कि गोविन्द गुरू की लोकप्रियता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

जिससे उन्हें अपने इसाई धर्म के प्रचार करने में संकट का सामना करना पड़ सकता है।'54 'राजा व सामन्त भी अपना धैर्य खोते जा रहे थे आदिवासी विद्रोह को कुचलने अंग्रेजी अधिकारियों के कान भरने तेज कर दिए।'[55] डूँगरपूर महारावत्न को सबसे अधिक चिंता थी। इसलिए अंगे्रजों से कहते है।

"आप कुछ प्रभावी कदम उठावें वरन ये विद्रोही यहाँ के

अलावा मेवाड़ व ईडर को भी कष्ट देंगे।''56

इतना सब कुछ हो जाने के बाद भी हम यह नहीं कह सकते थे कि मानगढ़ हत्याकांड के पिछे वहाँ के राजाओं, सामन्तों-जागीदारों का ही हित और हाथ था। अंग्रेजी सरकार स्वयं भारत के प्रत्येक भू-भाग पर अपना पूर्ण नियंत्रण स्थापित करना चाहती थी। इसलिए उसने 'जंगलात विभाग और आबकारी विभाग' खोलकर नई नितियाँ लागू की। जिससे ये केन प्रकारेण भारतीय जनमानस पर नियंत्रण स्थापित किया जा सके। हाँ, स्थानीय शासकों का नीति स्वार्थ अवश्य था। लेकिन मुख्य रूप से अंग्रेजी सरकार जिम्मेदार थी। जिसका मुख्य उद्देश्य भारत की प्रकृति का दोहन व जनता का शोषण कर भारत को आर्थिक रूप, सामाजिक, राजनैतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक रूप से पंगु बनाना था।

मानगढ़ आन्दोलन कुचल दिया गया। लेकिन उसने दूरगामी परिणाम छोड़े।मनगढ़ की पहाड़ी आदिवासियों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बन गयी।वागड़ के आदिवासियों का बलिदान व्यर्थ नहीं किया।गोविन्द गुरु को गिरफ्तार किया गया। विभिन्न मुकदमें दर्ज किए गए। फिर भी जनता में उनकी लोकप्रियता व उनके द्वारा किए गए जनहितैषी कार्यों को ध्यान में रखते हुए उनकी सजा को कम करते हुए उन्हें सशर्त छोड़ा गया।लेकिन उन पर आदिवासियों के क्षेत्रों में यथा डूँगरपुर, बांसवाड़ा, सूंथ, कुशलगढ़, ईडर आदि में आने पर प्रतिबंध लगा दिया।'[57]

इस घटना के बाद 'गोविन्द गुरू द्वारा रखी गई मांगों को अंग्रेजी सरकार ने मानकर आंशिक तौर पर मेवाड़ सहित आदिवासी इलाकों में लागू कर दी।'[58]

'मानगढ़ पहाड़ी की घटना की जाँच परख के तदुपरान्त राजस्थान सरकार ने भारत सरकार को भानगढ़ धाम के विकास बाबत प्रस्ताव भेजे। भारत सरकार छानबीन कर मानगढ़ धाम के विकास हेतु 2 अगस्त, 2002 को 2 करोड़ 23 लाख रूपये की राशी स्वीकृत की और सैधांतिक स्तर पर यह घोषणा की कि 'जलिया वाला हत्याकांड' अमृतसर से छः वर्ष पहले राजस्थान के दक्षिणी पूर्वी अंचल में अवस्थित बांसवाड़ा जिले की मानगढ़ पहाड़ी पर घटित हो चूका।जो भारतीय इतिहास का 'पहला जलियावाला' हत्याकांड था। जिसमे जलियावाला हत्याकांड (अमृतसर) के मुकाबले मे चार गुणा अधिक वीरों ने शहादत दी। इस तरह उनकी बलिदानी को स्मरण करने केउद्देश्य के रूप मे छः सौ फीट की उचाई वाले पहाड पर 54 फीट उँचा शहीद स्मारक बना कर सजाया गया।यहां पर गोविन्द गुरू की प्रतिमा भी स्थापित की गई।[59] गोविन्द गुरू आदिवासियो के मसीहा थे। बागड के आदिवासी समुदाय के लोकनायक थे। इनके कार्योंव आज के संदर्भ में आदिवासी विकास और विस्थापन पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कोकरिया, प्रेमसिंह, भील क्रांति के प्रेरणता; मोती लाल तेजावत, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, सन् 1985, पृ0 15
2. मायुर, एल.पी, गोविन्द गिर व उनका आंदोलन, महिमा प्रकाशन, रायपुर सन् 2005, पृ0 29
3. वही पृ0 30
4. कोकरिया, प्रेमसिंह, भील क्रांति के प्रेरणता; मोती लाल तेजावत, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, सन् 1985, पृ0 16
5. मायुर, एल. पी. गोविन्द गिर व उनका आंदोलन, गुरू महिमा प्रकाशन, जयपुर, 2005, पृ0 30
6. वही पृ0 30
7. जैन, भगवतीलाल, स्वतंत्रा संग्राम में भगत आंदोलन का योगदान, पृ0 18-23
8. कोकरिया, प्रेमसिंह, भील क्रांति के प्रेरणता; मोतीलाल तेजावत, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, पृ0 16
9. मायुर एल. पी., गोविन्द गिर व उनका आंदोलन, राज्य महिमा प्रकाशन, जयपुर, सन् 2005, पृ0 30
10. वही पृ0 37
11. वही पृ0 36
12. वही पृ0 36
13. वही पृ0 36
14. वही पृ0 36
15. वही 35,36
16. मीणा, हरिराम, धूणीतपेतीर, साहित्य उपक्रम समिति, दिल्ली, सन् 2016, पृ0 70
17. कांकरिया, प्रेमसिंह, भील क्रांति के प्रेरणता; मोतीलाल तेजावत, राजस्थान साहिस्य अकादमी, उदयपुर, सन् 1985, पृ0 16

18. मीणा, जगदीश चन्द, भील जनजाति का सांस्कृतिक एवं आर्थिक जीवन, हिमांशु पब्लिकेशंस, उदयपुर, सन् 2003, पृ0 1

19. गुप्ता रमणिका, आदिवासी अस्मिता का संकट, रमणिका फाइडेरान, दिल्ली, सन् 2013, पृ0 52

20. मीणा, जगदीश चन्द, भील जनजाति का सांस्कृतिक एवं आर्थिक जीवन, हिमांशु पब्लिकेशंस, उदयपुर, सन् 2003, पृ0 1

21. तिवारी, शिवकुमार (डा.), शर्मा, कमल (डा.) मध्यप्रदेश की जनजातियाँ: समाज और व्यवस्था, 38

22. वी. कृष्णा व भीम सिंह, (सम्पादक), आदिवासी विमर्श स्वराज प्रकाशन दिल्ली, सन् 14, पृ0 78

23. मीणा, जगदीश चन्द: भील जनजाति का सांस्कृतिक एवं आर्थिक जीवन हिमांशु पब्लिकेशन, दिल्ली, सन् 2003, पृ0 22

24. वही पृ0 14

25. मीणा, हरिराय, धूणीतपे तीर, साहित्य उपक्रम समिति, दिल्ली, सन् 2006, पृ0 125

26. वही पृ0 व सन् 125

27. वही पृ0 व सन् 124

28. कांकरिया, प्रेमसिंह, भील क्रांति के प्रणेता, मोतीलाल तेजावत, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, सन् 1985, पृ0 47

29. मायुर, पी. एल., गोविन्द गिर व उनका आंदोलन, शब्द महिमा प्रकाशन, जयपुर सन् 2005, पृ0 49, 50

30. वही, पृ0 50

31. वही, पृ0 57

32. वही, पृ0 29

33. सरकार, सुमित, अधिक भारत, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, सं. 2018 पृष्ट 174

34. वही, पृ0 59

35. वही, पृ0 51

36. मीणा, हरिराम, धूणी तपे तीर, साहित्य उपक्रम समिति, दिल्ली, सन् 2016, पृ0 353

37. वही, पृ0 356

38 शर्मा, बृज किशोर, राजस्थान में किसान एवं आदिवासी आन्दोलन, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, सन् 2013, पृ0 87

39. मीणा, हरिराम, धूणी तपे तीर, साहित्य उपक्रम समिति, दिल्ली, सन् 2016, पृ0 348

40. शर्मा, बृजकिशोर, राजस्थान में किसान एवं आदिवासी आन्दोलन, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, सन् 2013, पृ0 89

41. मीणा, हरिराम, धूणी तपे तीर, साहित्य उपक्रम समिति, दिल्ली, सन् 2016, पृ0 350

42. वही, 351

43. वही, 358

44. वही, 365

45 कार, ई. एच., इतिहास क्या है, त्रिनिटी प्रकाशन, पृ0 6

46. मीणा, हरिराम, धूणी तपे तीर, साहित्य उपक्रम समिति, दिल्ली, सन् 2016, पृ0 59

47. सरकार, सुमित, आधुनिक भारत, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, सन् 2009, पृ0 74

48 गुप्ता, रमणिका, आदिवासी लेखन उभरती चेतना, रमणिका फांउडेशन, दिल्ली, सन् 2011, पृ0 22-23

49 मीणा, हरिराम, धूणी तपे तीर, साहित्य उपक्रम समिति, दिल्ली, सन् 2016, पृ0 21

50. मायुर, एल. पी., गोविन्द गिर व उनका आन्दोलन, शब्द महिमा प्रकाशन, जयपुर, सन् 2005, पृ0 59

51 सरकार, सुमित, आधुनिक भारत, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली सन् 2009, पृ0 174

52 माथुर, एल. पी., गोविन्द गिर व उनका आन्दोलन, शब्द महिमा प्रकाशन जयपुर, सन् 2005, पृ0 60

53. वही, पृ0 52

54. वही, पृ0 61

55. शर्मा, बृजकिशोर, राजस्थान में किसान एवं आदिवासी आन्दोलन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, सन् 2011, पृ0 97

56. मीणा, हरीराम, धूणी तपे तीर, साहित्य उपक्रम समिति, दिल्ली, सन् 2016, पृ0 355

57. शर्मा, बृज किशोर, राजस्थान में किसान एवं आदिवासी आन्दोलन, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर , सन् 2011, पृ0 100

58. वही, पृ0 101

59. मीणा, हरिराम, धूणी तपे तीर, साहित्य उपक्रम समिति, दिल्ली, सन् 2016, पृ0 20